Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

ग्लोबल साउथ देशों में हिन्दी गिरमिटिया साहित्य का प्रसार और प्रभाव का अध्ययन

डॉ. गोपीराम शर्मा सह-आचार्य (हिन्दी), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

ग्लोबल साउथ ऐसे देशों का समूह है जो माना जाता है कि कम विकसित है और उनकी आय भी कम है। इनको तीसरी दुनिया के देश भी कहा जाता रहा है। हालांकि उनके पास बहुत बड़ा जन समुदाय और अपना एक सांस्कृतिक वर्चस्व है।

भारत के इन देशों से प्राचीन काल से ही संबंध रहे हैं वर्तमान में भारत उनकी आवाज बन रहा है। अंग्रेजी शासन काल के दौरान गिरमिटियों के रूप में भारत से बहुत से मजदूर इन देशों में गए। ये अपने साथ भारत की संस्कृति और भाषा को भी साथ लेकर गए। वहां रहकर अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते हुए इन्होंने नए केवल भाषा को बचाए रखा बल्कि अपने धर्म और संस्कृति को भी उन्होंने यथासंभव स्थापित किए रखा। देश से दूर होकर इन्होंने जो संघर्ष किया पीड़ा, भोगी, उसका इन्होंने साहित्य में वर्णन किया, जिसे गिरमिटिया साहित्य कहा जाता है। भारतीय साहित्यकारों ने और प्रवासी साहित्यकारों ने गिरमिटियों के विषय में बखूबी लिखा है। मॉरीशस, फिजी, त्रिनिदाद, टबैको, सूरीनाम, गुयाना और दक्षिण अफ्रीका के कई स्थानों पर गिरमिटियों ने साहित्य रचना की है। इस साहित्य में उनके संघर्ष, प्रवास के दुःख-दर्द, धर्म और संस्कृति को बनाए रखने की जद्दोजहद, स्वभाषा का संघर्ष, पहचान का संघर्ष आदि का वर्णन अपनी भाषा में किया गया है। यह साहित्य खड़ी बोली और अन्य बोलियों के शब्दों मिश्रण से बनी भाषाओं में हुआ है।

कह सकते हैं कि ग्लोबल साउथ के देशों में रचा गया यह साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस साहित्य में नए केवल भारतीयों के संघर्ष की अदम्य में कहानी मिलती है बल्कि भाषा और साहित्य की दृष्टि से भी इसका अध्ययन आवश्यक है। आवश्यकता है कि इस साहित्य को भारतीय पाठ्यक्रमों में शामिल कर अध्ययन अध्यापन में उपयोग में लिया जाए।

KEYWORDS:

ग्लोबल साउथ, दूसरी दुनिया, एग्रीमेंट, संस्कृति, त्रिनिदाद, सूरीनाम, फिजी, मॉरीशस, गिरमिटिया, लाल पसीना, पहला कदम, लालारुख, नेताली हिंदी, सरनामी ।

विषय उपस्थापन

ग्लोबल साउथ से तात्पर्य उन देशों से हैं जिन्हें विकासशील, कम विकसित अथवा अविकसित के रूप में जाना जाता है, ये मुख्य रूप से अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका में स्थित हैं।

इन देशों में ग्लोबल नॉर्थ के धनी देशों की तुलना में गरीबी, आय असमानता और जीवन स्थितियाँ अधिक चुनौतीपूर्ण हैं। पहली बार वर्ष 1969 में 'ग्लोबल साउथ' शब्द को राजनीतिक कार्यकर्त्ता कार्ल ओग्लेसबी द्वारा दिया गया था।"[1]

सोवियत संघ को दूसरी दुनिया / सेकंड वर्ल्ड कहा गया। वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद तीसरी दुनिया अवधारणा सामने आई। बाद में इसे ही ग्लोबल साउथ कहा गया। ग्लोबल साउथ शब्द की कोई विशुद्ध भौगोलिक परिभाषा नहीं है। यह राष्ट्रों के बीच राजनीतिक, भू-राजनीतिक और आर्थिक समानताओं के संयोजन का प्रतीक है। ग्लोबल साउथ के कई देशों में साम्राज्यवाद और औपनिवेशिक शासन का इतिहास रहा है, विशेष रूप से अफ्रीकी देशों में यह स्पष्ट है। इस इतिहास ने विश्व राजनीतिक अर्थव्यवस्था के भीतर वैश्विक केंद्र (ग्लोबल नॉर्थ) और परिधि (ग्लोबल साउथ) के बीच संबंधों पर उनके दृष्टिकोण स्थापित किया है।

वर्तमान समय में भारत ग्लोबल साउथ की वॉयस बन रहा है। ग्लोबल साउथ देशों के साथ भारत के संबंध बहुत प्राचीन रहे हैं। राजनीतिक, सामरिक, कूटनीतिक, सांस्कृतिक संबंधों के साथ साहित्यिक आदान-प्रदान भी इन देशों से होता आया है।

सत्रहवीं सदी में आए अंग्रेज़ों ने गुलामी की शर्त पर लोगों को विदेश भेजना प्रारंभ किया। इन मज़दूरों को गिरी कहा गया। गिरी शब्द अंग्रेजी के 'एग्रीमेंट' शब्द का अपभ्रंश है। *"गिरमिट शब्द अंग्रेजी शब्द 'एग्रीमेंट' का भारतीय उच्चारण है, जो भारतीय उपमहाद्वीप के मजदूरों के साथ ब्रिटिश सरकार के अनुबंध 'समझौते' से लिया गया था।"*[2] इसमें कागज पर अंगूठे का निशान लगवाकर हर साल 10 से 15 हज़ार मज़दूर गिरमिटिया बनाकर फिजी, ब्रिटिश गुयाना, डच गुयाना, ट्रिनिडाड, टोबेगा, सूरीनाम, मारीशस, नेटाल (दक्षिण अफ्रीका) आदि को ले जाये जाते थे। 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासकों ने शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत भारतीय मजदूरों को विश्व के अनेक देशों में भेजा। इन मजदूरों के लिए 'गिरमिटिया' शब्द का प्रयोग किया गया। *"समझौतों में विदेशी भागों में श्रमिकों के रहने की अवधि और ब्रिटिश राज में उनकी वापसी से जुड़ी शर्तें निर्दिष्ट की गई थीं।"*[3]

भारतीय मजदूर अपने साथ रामचरितमानस, हनुमान चालीसा, आल्हा, सत्यनारायण कथा, गीता, महाभारत आदि के साथ-साथ अपनी भाषा / साहित्य और संस्कृति भी ले गए। इससे वैश्विक स्तर पर भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति का प्रसार हुआ। यह प्रक्रिया आज भी निरंतर चल रही है।

इन गिरमिटियों की समस्यायों पर हिंदी में भारत में भी साहित्य लिखा गया और जो प्रवासी ग्लोबल साउथ के देशों में गए उन्होंने भी अपनी समस्याओं को लिखा है। गिरिराज किशोर ने 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका में गिरमिट के रूप में रहते भारतीयों के जीवन को एक गरिमामय रूप से चित्रित किया है। इस उपन्यास के माध्यम से किशोर जी ने नायक गांधी जी के माध्यम से गिरमिट के रूप में रहते भारतीयों के लिए असह्य अथक प्रयत्नों से उन्हें आजादी और अनेक प्रकार की सेवा त्याग के माध्यम से गुलामी से रंग भेद से और अपने हक के लिए प्रयत्न किए थे, उनके अनेक प्रकार की यातनाओं से बाहर निकालने का प्रयास किया तो उसका सचोट वर्णन किया गया है। *"गिरिराज किशोर ने 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में महात्मा गांधी के दक्षिण- अफ्रिकी जीवन पर आधारित दक्षिण अफ्रीका में स्थित गिरमिटियों की दयनीय स्थिति का सही अंकन किया है। इसमें गांधी जी के दक्षिण अफ्रीका के संघर्षरत जीवन को उपन्यास का केंद्र बिंदु बनाया है।"*[4]

गिरमिटियों और प्रवासियों की समस्याओं समस्याओं को लेकर अनेक संस्थाओं ने विदेश में कार्य किया है। ऐसी अनेक संस्थाएं हैं जो विदेश की धरती पर हिंदी के प्रचार प्रसार का कार्य कर रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को बढ़ावा देने वाली ऐसी संस्थाओं में प्रमुख हैं- मॉरिशस हिंदी संस्थान, विश्व हिंदी सचिवालय, हिंदी सोसायटी (सिंगापुर), हिंदी परिषद (नीदरलैंड्स), हिंदी संगठन (मॉरिशस)।

इनके प्रयासों से हिंदी फल फूल रही है। आज वैश्विक फलक पर हिंदी दूसरा सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा का स्थान बनाने जा रही है। प्रवासी भारतीय अपने साथ अपनी भाषा, संस्कृति आचार-विचारों को भी लेकर गए और अपनी भाषा में ही साहित्य रचना कर इसे और समृद्ध बनाया है। थाईलैंड, हांगकांग, फिजी, सूरीनाम, मॉरिशस इत्यादि ऐसे देश हैं, जहाँ हिंदी भाषी प्रचुर मात्रा में उपस्थित हैं। विश्व के डेढ़ सौ से भी अधिक देशों में हिंदी के

शिक्षण के लिए केंद्र खोले गए हैं जिस कारण हिंदी की व्यापकता दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही है। गिरमिटिया देशों विशेषकर- सूरीनाम, त्रिनिदाद, फिजी और मॉरीशस में रामायण / गीता- पूजनीय ग्रंथ हैं और इसका महत्त्व यहाँ के लोगों के लिए वही है, जो हर भारतीय के जीवन में है।

सूरीनाम में प्रथम बार सन 1873 में भारतीय मजदूरों का 410 सदस्यीय दल लालारुख जहाज से इस धरती पर पहुँचा। यहाँ सप्तरंगी संस्कृति है। यहाँ की बोलचाल की भाषा सरनामी हिंदी कही जाती है जो विभिन्न भाषाओं की शब्दावलियों से बनी है। यह परिनिष्ठित हिंदी से भिन्न है। यह भाषा भोजपुरी, अवधी, मगही, मैथिली, ब्रज तथा अन्य बोलियों का सम्मिलित रूप है। सूरीनाम में अनेक संस्थाएं हिंदी भाषा के अध्ययन- अध्यापन से जुड़ी हैं, जैसे सूरीनाम हिंदी परिषद, सनातन धर्म महासभा सूरीनाम, हिन्दू मीडिया, सूरीनामी प्रवासी संस्था, आर्य प्रतिनिधि सभा, नवयुग उदय, जिदवा संस्था, सूरीनाम साहित्य मित्र आदि।

सूरीनाम में अनेक लोग हिंदी में सृजनरत हैं। यहां के प्रमुख कवियों में अमर सिंह रमन, महदेव खुनखुन, आशा राजकुमार, कारमेन जगलाल, चन्द्रमोहन रंजीत सिंह, चित्रा गयादीन, नाराइन सिंह 'सुभागा', जीत नराइन, तेज प्रसाद खेदू, देवानंद शिवराज, धीरज कंधई, बिहारीलाल कल्लू, मुंशी रहमान खान, राज मोहन, राज रामदास, रामदेव महाबीर, रामदेव रघुबीर, लक्ष्मीप्रसाद बलदेव, श्रीनिवासी, सन्ध्या भग्गू, सुरजन परोही, सुशीला सुक्खु, सुशीला बलदेव मल्हू, हरिदेव सहतू आदि हैं।

1845 को फ़तल अल रज़्ज़ाक जहाज से कैरेबियन द्वीप त्रिनिदाद एवं टोबैगो में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का आगमन हुआ था। ये लोग भी अपने साथ रामचरितमानस, हनुमान चालीसा की कुछ बीज पंक्तियाँ मन में समेटे यहाँ पहुँचे थे। त्रिनिदाद में कनाडाई मिशनरियों, सनातन धर्म महासभा एवं अन्य संगठनों के व्यक्तिगत प्रयासों से हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ। त्रिनिदाद में भारतीय हिंदी गायन परंपरा का प्रभाव रहा है। यहां के मंदिर भी किसी न किसी रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ भारतीय संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन का कार्य कर रहे हैं। यहाँ की सड़कों, चौराहों, संस्थानों के नाम ठेठ भारतीय हैं,जैसे- दुर्वासा रोड, रामजान एवेन्यू, पतिराम रोड, दिल्ली स्ट्रीट, पटना स्ट्रीट, कलकत्ता स्ट्रीट, लखनऊ स्ट्रीट, गांधी आश्रम, कबीर चौरा मठ, स्वामी विवेकानंद स्कूल और हिंदी निधि आदि। त्रिनिदाद में हिंदी का प्रयोग मूलतः आपसी व्यवहार में अधिक और लेखन में अपेक्षाकृत कम होता है। इसलिए यहां लिखित साहित्य अल्प मात्रा में उपलब्ध है।

यहां प्रो. हरिशंकर आदेश भारतीय भाषा-साहित्य और संस्कृति के संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। अभी तक इनके 300 से अधिक हिंदी ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। जिनमें अनुराग, शकुन्तला, महारानी दमयन्ती, ललित गीत रामायण, देवी सावित्री, रघुवंश शिरोमणी जैसे महाकाव्य, निराशा, रवि की भाभी (हास्य-व्यंग्य), मन की दरारें आदि प्रमुख रचनाएँ उल्लेखनीय हैं। जीवन ज्योति, प्रगति, वर्ष-विवेक, अंतरिक्ष-समीक्षा आदि पत्रिकाओं संपादन भी किया है। इनके अलावा त्रिनिदाद में सुमति करीम, जिन्सी सम्पत, विमला रामसुमेर, विषम विमुल, डॉ. रामपरसाद परसराम, तेज रामलखन, कमला रामलखन, पंडिता इंद्रानी रामपरसाद, जसोदरा सिंह, जानकी बलदेवसिंह, जैरीबन्नन जैसे लेखक स्वांतः सुखाय के लिए हिंदी में रचना कर रहे हैं।

फिजी में आपसी व्यवहार में प्रयुक्त हिंदी 'फिजिबात' कहलाती है। फिजिबात हिंदी में भोजपुरी, फ्रेंच और डच का मिश्रण है। फिजी में गिरमिटियों ने हिंदी को विकसित किया, जिसकी अब लेखन की समृद्ध परंपरा है। प्रो सुब्रमणि के दो वृहद उपन्यास 'डउका पुराण' और 'फीजी माँ', प्रो बृज बिलास लाल की उपन्यासिका 'मारित रचनाएं', हिंदी जगत में विशेष महत्त्व रखती हैं। इनके अलावा रेमंड पिल्लई, कवि पंडित कमला प्रसाद मिश्र, जोगिन्दर सिंह कंवल, अमरजीत कौर, काशीराम कुमुद, राघवानंद शर्मा, सरस्वती देवी, नेतराम शर्मा आदि हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। फिजी के हिंदी साहित्य की मूल संवेदना गिरमिटिया जीवन से जुड़ी है जो स्वदेश, स्वभाषा, स्वसंस्कृति की रक्षा और प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष, विस्थापन और प्रतिस्थापन पर आधारित है। फिजी में रेडियो ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसमें हिंदी के कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित होते रहते हैं।

भारत से बाहर मॉरिशस एकमात्र ऐसा देश है जहाँ साहित्य की सभी विधाओं में साहित्य का सृजन हो रहा है और हिंदी जगत् में उनको पर्याप्त स्वीकृति भी मिल रही है। मॉरिशस में आर्य समाज, हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी स्पीकिंग यूनियन आदि का विशेष स्थान है। यहाँ पर रह रहे भारतीय मूल के लोगों की सांस्कृतिक पहचान में इन संगठनों का महत्त्वपूर्ण योगदान है। मॉरिशस में भारतीय मूल के गिरमिटियों की तीसरी-चौथी पीढ़ी मॉरिशस के सर्वोच्च पदों पर आसीन है। यहाँ के साहित्यकारों में ब्रजेन्द्र भगत मधुकर, अभिमन्यु अनत, सोमदत्त बखोरी, डॉ मुनीश्वर चिन्तामणि, रामदेव धुरंधर, वीरसेन जागासिंह, प्रहलाद रामशरण, सरिता बुधु, भानुमती नागदान, पूजानंद नेमा, वेनीमाधव रामखिलावन, हेमराज सुन्दर, उदयनारायण गंगू, दीपचंद बिहारी और अजामिल माताबदल आदि उल्लेखनीय हैं। ब्रजेन्द्र भगत मधुकर मॉरिशस के राष्ट्र कवि कहे जाते हैं। इनके काव्य में 'हिंदू-हिंदी-हिंदुस्तानी' के साथ मॉरिशस का इतिहास, स्वतंत्रता आंदोलन, एकता समन्वय और देश के विकास के भाव-बोध की प्रमुखता है। अभिमन्यु अनत मॉरिशस के प्रमुख कथाकार हैं। इन्होंने हिंदी में 32 उपन्यास, 5 कहानी संग्रह और इतने ही नाटक लिखे हैं। अभिमन्यु अनत के योगदान के बारे में सोमदत्त बखोरी के शब्दों में-

"भाषा की लड़ाई में ऊँचा किया नाम अपना और अपने देश का ऊँचा किया नाम अपने पूर्वजों का और उनके देश का।"[5]

अनत जी के बाद रामदेव धुरंधर ने अधिक उपन्यास लिखे हैं- पथरीला सोना, पूछो इस माटी से, छोटी मछली बड़ी मछली, चेहरों का आदमी, बनते बिगड़ते रिश्ते, विराट गली के बासिंदे आदि।

'पहला कदम' मॉरीशस का पहला हिन्दी उपन्यास माना जाता है जो 1960 में छपा। इसके रचयिता कृष्ण लाल बिहारी हैं। इन्होंने अपने पूर्वजों की पीड़ा को रचनाओं के माध्यम से दर्शाया है। कृष्ण लाल बिहारी के शब्दों में-

"मैंने अपनी पुस्तक 'पहला कदम' हिन्दू में जाति को जीवित रखने और हिंदी भाषा की धारा बहाने के उद्देश्य से बनायी है। इसमें मैंने एक प्रेम दृश्य खींचा है, जो साहित्य रूपी गुण से सींचा है।"[6]

गिरमिटिया देशों में हिंदी के प्रति लोगों में जो सम्मान और आदर का भाव है, वह अन्य देशों से अलग है। सभी गिरमिटिया देशों में हिंदी के सृजनात्मक साहित्य का भण्डार है। सभी प्रवासी भारतीय विदेश में अपनी भाषा की रक्षा, संरक्षा, एवं भषा के प्रति सचेष्ट है, यही कारण है कि सर्वत्र विदेश में जहाँ- जहाँ भारतीय, प्रवासी या अप्रवासी के रूप में गए हैं वे हिंदी बोलने का प्रयत्न करते है और अपनी भाषा एवं संस्कृति पर उन्हें गर्व है। *"वे अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सिखाना चाहते हैं। क्योंकि वही हिंदी उन्हें विदेश में जोड़ने वाली ताकत है।"*[7]

कहा जा सकता है कि प्रवास में निवास कर रहे भारतवंशी अंग्रेजी नीति के शिकार होने के साथ ही साथ उनकी औपनिवेशिक नीतियों के दंश को भी झेला। वे गरीब शोषित, पीड़ित, प्रताड़ित, एवं अपमानित होते हुए भी अपनी संस्कृति एवं मानवीय मूल्यों को बचाए रखने में सफल रहे, साथ ही अपनी भाषागत एकता की मूल्यों को भी बनाए रखने में सफल हुए हैं। एक समय था जब भोजपुरिया समाज वहां खुल कर अपनी भाषा में वार्तालाप भी नहीं कर सकता था। उन्होंने वहां अपनी भाषा में साहित्य रचा। इस संदर्भ में मॉरिशस के लोकप्रिय रचनाकार अभिमन्यु अनत ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'लाल पसीना' में लिखा है-

"जिस दिन गोरे सरदारों की ड्यूटी की बदली की जाती उस दिन सारे भारतीय मजदूर खुलकर बातें कर पाते।"[8]

भाषा की दृष्टि से फिजी में गिरमिटिया हिंदी के नव विकसित भाषा के रूप में फिजीबात, सूरीनाम में सरनामी, दक्षिण अफ्रीका में नेताली हिंदी रूप विकसित हुए। जिनके मूल में अवधी, भोजपुरी और खड़ीबोली के शब्द थे। श्री जितेन्द्र कुमार मित्तल 'मॉरिशस देश और निवासी' में लिखते हैं- *"भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व मॉरिशस में स्थिति यह थी कि भारतीय मूल के सभी मॉरिशसवासियों की साहित्य की भाषा खड़ीबोली हिंदी थी, किन्तु भारत के स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वहाँ से आने वालों में प्रांतीयता की भावना और भाषा का उन्माद स्वरूप उत्पन्न हुआ है। फलस्वरूप अब हिंदी केवल हिंदी भाषी राज्यों से आये हुए लोगों तक सिमटती जा रही है।"*[9]

निष्कर्ष-

कहा जा सकता है कि मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयना, त्रिनिडाड, और टोबैगो आदि विभिन्न ग्लोबल साउथ देशों में भारतीय मूल के लोगों ने बहुत संघर्ष किया और बाद में अपनी प्रतिभाओं के झंडे गाड़े हैं। इन देशों में उन्होंने हिंदी की मशाल को वहां जलाए रखा है। गिरमिटियों ने संघर्ष करके न केवल अपने अस्तित्व को बचाए रखा बल्कि अपने धर्म और संस्कृति को भी उन्होंने संभाले रखा। अपनी भाषा को भी बचाए रखा। उनके प्रयासों से

ही विदेशों में हिंदी के विस्तार स्वरूप की महता मिल पाई है। अतः हिंदी को विकसित रूप प्रदान कर पाने में इन प्रवासी साहित्यकारों का सफल योगदान रहा है।

आवश्यकता है कि गिरमिटिया साहित्य का अध्ययन भारत में समुचित रूप से हो ताकि हम अपने भारतवंशियों के संघर्ष को जान सकें। इसके साथ उनके द्वारा रचित साहित्य को यहां के हिंदी साहित्येतिहास में शामिल कर उचित सम्मान दिया जाए, ताकि उनका सम्यक मूल्यांकन हो सके।

REFERENCES

1. https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-analysis/global-south-3
2. गिरमिट इतिहास, www.fijigirmit.org, 10.11.2020
3. गिरमिट इतिहास, अनुच्छेद 2, www.fijigirmit.org, 10.11.2020
4. गिरिराज किशोर-पहला गिरमिटिया, भारतीय ज्ञानपीठ, प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण, 1999, पृष्ठ 37
5. http://en.wikibooks.org
6. कृष्ण लाल बिहारी-पहला कदम, पृष्ठ 78
7. विमलेश कांति वर्मा-गगनांचल, वर्ष-40, अंक-1-2, जनवरी- अप्रैल, 2017, पृष्ठ 07
8. अभिमन्यु अनत- लाल पसीना, पृष्ठ 125
9. श्री जितेन्द्र कुमार मित्तल- मॉरिशस देश और निवासी, पृष्ठ 67